04.8.20

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज

मेघगीत (जानकी वल्लभ शास्त्री)

प्रश्न : 'मेघगीत' कवितासारांश लिखिए।

उत्तर : 'मेघगीत' शीर्षक कविता आचार्य जानकी-वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित है। इस कविता में दुखी और तप्त धरती की पीड़ा मिटाने हेतु मेघ के बरसने का आह्वान किया गया है। सम्पूर्ण कविता में शुरू से अंत तक व्यंग्यात्मक पद से बादल का व्यक्तित्व कई जगह अन्योक्तिपरक दिखलाई पड़ता है।

कवि कहता है— भीषण गर्मी पड़ रही है, सूर्य की किरणें तप्त हो उठी हैं, जिसके फलस्वरूप सभी फल-फूल, गुल्म मुरझाकर काले पड़ गए हैं। मनुष्य की भी यही दशा है — स्त्री, पुरुष सभी के कंठ सूख गए हैं, उनके हृदय व्याकुल हो गए हैं, स्वर कातर हो उठे हैं। इस विषम परिस्थिति में बादल यदि 'मेघ शावक' और गज-सी क्रीड़ा करता हो तो उसका यह कार्य धरती पर रहने वाले प्राणियों को नहीं सुहाता है। अतः ऐसी परिस्थिति में उसे बरस जाना चाहिए, व्यर्थ शून्य में गर्जना करने से कोई लाभ नहीं। गर्मी के कारण आज ऊँचे-ऊँचे ताड़ों पर सिर्फ सूखे पत्ते लहरा रहे हैं। उनकी डालियों चील-गीध मँडराते नजर आते हैं। कहीं भी हरियाली का पता नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है मानो ऊपर ही ऊपर कोई सरसता को पीता चला जा रहा है और धरती पर किसी को सरसता नहीं मिल रही है। बादल को सागर पर उमड़ने-घुमड़ने से नहीं कोई लाभ। जहाँ जीवनदायक जल की आवश्यकता है, वहीं उसे बरसना भी चाहिए।

भीषण गर्मी पड़ रही है, पर बादल धरती वालों से हटकर आकाश सुशोभित है। जिस प्रकार नेतागण जनता से हटकर गगनचुंबी मंच पर आसीन हैं, उसी तरह बादल भी नेताओं की प्रचलित परंपरा का निर्वाह कर रहा है। इस प्रकार कवि ने मेघ के आह्वान के व्याज से आज के समाज की आलोचना की है।

P. T. O

धरती मेघ को अपने पास बुला रहा है, उसके मुख से शब्द नहीं निकल पा रहे हैं। अतः कवि मेघ को आह्वान करता हुआ कहता है कि बादल को प्रत्येक खेत को अपने जल से भर देना है। समय बीतता चला जा रहा है जो लौटकर आने वाला नहीं है। अतः बादलों को उचित समय पर इस सुनसुना पड़ी वसुन्धरा पर फूल खिला देना चाहिए यह तभी संभव है जब बादल आकर उस धरती को खिंचित कर दे। उन सांवले-सलोने बादलों को तो अभी प्रिय बनकर सात समुद्रों को तैर कर पार करते हुए लुक-छिपकर उस धरती पर आजाना चाहिए। आशावादी भावनाओं से ओत-प्रोत हो कवि कहता है कि देखो! वह बादल कब इस संतप्त वसुन्धरा को अपने जल से आप्लावित करता है, कब वह फिर से उस वृन्दावन को हरा-भरा करता है तथा उसके आगमन से धरती के अंग-अंग कब खिल उठते हैं। यह देखना होगा। कोने-कोने में मधुर शब्दों का गुंजार जब होने लगता है, वह मेघ न जाने कब आता है?

कवि ने प्रस्तुत कविता में बादल के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का आख्यान करता है। बादल धरती के ताप को दूर करने वाले, उसके विदीर्ण हृदय-स्थल को जुड़ानेवाले होते हैं। आज जीवन में दुहरा ताप है। वह प्राकृतिक उतना नहीं, जितना मनुष्य निर्मित है, सामाजिक और आर्थिक है। इस वैषम्य को समाप्त करना, पीड़ा से मुक्ति देना ही कवि के अनुसार बादल का दायित्व है। अतएव यह कविता प्रकृति-परक होती हुयी भी सामाजिक, राजनीतिक चेतना से सम्पृक्त है।

W.G. B.A. Part I

Principal Hindi

'Meghgeet ka Saransh'